स्वतंत्र भारत में बालिका शिक्षा और आर्थिक उन्नयन

डॉ0 वन्दना सिंह
पी.डी.एफ. समाजशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

विश्व में महिलाओं की कुल संख्या कुल जनसंख्या की लगभग आधी है इस संख्या में केवल आधी संख्या एशिया में निवास करती है। एशिया, अफ्रीका एवं लेटिन अमेरिका में आज भी महिलाओं की दशा विचारणीय है। इन समाजों में पुरूषों की प्रधानता है–उन्हें ही विभिन्न क्षेत्रों में विशेषाधिकार प्राप्त है। महिलाओं की दशा में वांक्षित सुधार आवश्यक है कि लोगों की मनोवृत्ति तथा दृष्टिकोण परिवर्तित हो। इसके लिये समुचित नारी शिक्षा आवश्यक है।

इसमें दो राय नही कि 1947 के बाद महिला शिक्षा में विकास हुआ है। जहाँ भारत वर्ष में 1947 में मात्र 17 प्रतिशत लोग पढ़ लिये या साक्षर थे वही आज इसका प्रतिशत बढ़कर 74 प्रतिशत हो गया है। प्रतिशत में वृद्धि उल्लेखनीय है लेकिन आज भारत की कुल आबादी को ध्यान में रखे तो विवादित है कि आज भी भारत में कुल जनसंख्या की आधी जनसंख्या आज भी शिक्षा से वंचित है। जिसमें अधिकांश महिलाएँ हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का अशिक्षित रहना न केवल उनके जीवन में बाधा है बल्कि यह समपूर्ण समाज के पिछड़ेपन को इंगित करता है। भारत के कुछ राज्य सरकारों ने स्नातक स्तर तक शिक्षा को निःशुल्क बना दिया है। जो आगामी कुछ समय में सम्पूर्ण महिलाएँ शिक्षित हो सके।

बहुत कुछ परिवर्तित हो जाने के बाद आज भी परिवार में कन्याओं का जन्म अशुभ माना जाता है आज भी अभिभावको की प्राथमिकता पढ़ाना–लिखाना न होकर उनका विवाह माना जाता था। मगर आज हमारा देश महिलाओं के शिक्षा के प्रति बहुत ही जागरूक हो गया है।

भारत गांवो का देश है लगभग छः गांवो में जो 76 प्रतिशत लोग रहते है वहाँ सभी जगह आर्थिक विकास समान रूप से नही हो पाता है। पिछले 50 वर्षो में आर्थिक विकास 6 से 7 प्रतिशत रहा है। फिर भी मानवीय विकास जिसमें शिक्षा प्रमुख है बहुत कम अंश का हो सका है। आज ''वैश्विकरण प्रक्रिया'' के अन्तगर्त विदेशी कंपनियाँ भारत में आ कर कल कारखाने लगाने के लिये तत्पर हैं। यह भारत के औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के लिये अच्छी झलक है लेकिन उन उद्योगों में कुशल श्रमिक के रूप में किन्हें कार्य करने का मौका मिलेगा? उत्तर है कि यहाँ के लागों को इसलिये नही मिलेगा क्योकि वो शिक्षित एवं योग्य नहीं है। स्थानीय लोगो को केवल अकुशल कार्य ही मिल सकेंगे। महिला जा अपेक्षाकृत कम शिक्षित है उन्हें उन उद्योगों का कुक्ष भी लाभ नही मिलेगा। चीन में लोगों का रहन सहन का स्तर सुधरा है इसके पिछे उच्च स्तर की शिक्षा की व्यवस्था है। महिला शिक्षा का यह परिणाम है कि चीन में जन्म दर कम हुआ है। विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा तीव्र जनसंख्या वृद्धि है। जबतक लोगों में जनसंख्या को नियत्रिंत करने की दृड़ इच्छा शक्ति विकसित नही होगी तबतक विकास संम्भव नही हो सकेगा। इसमें भी शिक्षा का योगदान विशेषकर महिला शिक्षा अधिक सहायक सिद्ध होगी। हम जो भी उत्पादन कार्य करे वह उच्च कोटि का हो इसके लिये शिक्षा आवश्यक है।

नेशनल कौंसिल फार एप्लायड एकोनामिक रिसर्च के एक रिपोर्ट ''इण्डिया ह्यूमन डेवेलपमेण्ट रिपोर्ट'' में कहा गया है कि भारत में हिलाओं की शिक्षा से समस्याएँ जुड़ी हुई है। रिपार्ट में कहा गया है कि परिवार में थोड़ी सी मुसीबत के कारण भी लड़कियों की शिक्षा बन्द कर दी जाती है। उन्हें अपने छोटे–भाई बहनों के देख–रेख की जिम्मेदारी दे दी जाती है। यह माना जाता है कि ''नारी शिक्षा' अनुत्पादक एवं निरर्थक है। लड़कियों का विवाह बिना किसी बाधा के हो जाये और उनका विवाह कम उम्र में हो जाए इसके लिये लोग लड़कियो को दूर पढ़ने के लिये नही भेजते। लड़कियों को लड़को के साथ पढ़ाने के पंख में अधिकांश ग्रामिण आज भी नही है। इतना ही नही पुरूष अध्यापकों से भी लोग लड़कियों को पढ़ाना नही चाहते। अधिकांश गांवों में जो प्राथमिक विद्यालय चल रहें है वहाँ लड़कियों की संख्या लड़को की तुलना में कम हाती है। वह संख्या उनके संख्या की कुल चौथाई भी नही होती है। धनी परिवारो में भी नारी शिक्षा के प्रति झुकाव इस कारण है कि लड़कियों का विवाह अच्छे वर से हा

सके। पूरे देश में केवल केरल में लिंग भेद शिक्षा स्तर में बाधक नही है। वहाँ गरीबी और अमीरी की स्थिति शिक्षा के प्रचार प्रसार को प्रभावित करती है।

अनुसूचित जाति एवं अल्प संख्यक जिसकी आर्थिक स्थिति कमजोर है वे अपने परिवार के लड़कियों को शिक्षा नही दे पाते। महिलाओं की शिक्षा के अभाव में परिवार के आश्रितों की देखभाल ठीक से नही हो पाता है। विशेषकर बच्चों के देख भाल के बारे में उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण नही बन पाता है। इसलिये शिशु मृत्यु दर अधिक होता है। चूँकि अशिक्षित महिलाएँ अपने बच्चों की देख रेख ठीक से नही कर पाती है इसलिये शिशु मृत्यु दर अधिक होता है। शिशु मृत्यु दर अधिक होने के कारण वे अधिक संतानों को जन्म देती है जिसका परिणाम होता है अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि। उत्तर प्रदेश व बिहार की महिलाओं में 59.26 पंतिशत व 51.5 प्रतिशत ही साक्षर है। जो कामकाजी महिलाएँ है वे तभी तक काम करती है जब तक की उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती है।

महिला महाविद्यालय बस्ती के 100 स्नातक स्तर के छात्राओं से तथ्य एकत्रित करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुचे की आज भी उन्ही परिवारों से लड़कियाँ स्नातक तक की शिक्षा के लिये आती है जिन परिवारों में कई पीढ़ी के लोग पढ़े लिखे है। उत्तरदाता छात्राओं के माता पिता बेटियों को पढ़ाने के लिये इसलिये भेजते है कि उनका विवाह अच्छे परिवार में हो सके। एक विशेष तथ्य जो अध्ययन से मिला वह यह है कि अनुसूचित जातियों के लड़कियों का प्रतिशत उच्च शिक्षा में बढ़ा है। इसका एक प्रत्यक्ष कारण यह भी हो सकता है कि अनुसूचित जाति के लड़के लड़कियों का छात्रवृत्ति मिलती है।

इस सर्वेक्षण में पाया गया कि शत प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना था कि समाज में श्रेष्ठ प्रस्थिति प्राप्ति के लिये शिक्षा आवश्यक है। लड़कियों का यह विचार था कि इस पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियाँ औपचारिक संगठनों में अधिक संख्या में इस लिये नही आ पायी क्योकि उनकी शिक्षा व्यवस्था पुरूषों से भेद– भाव किया गया। परिवार में लड़को के शिक्षा में तो माता–पिता चिंतित रहते है लेकिन लड़कियों की शिक्षा में वे कम रूचि लेते है। यदि बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण करने की बात हो तो अधिकांश अभिभावक इसके लिय तैयार नही होते। 75 प्रतिशत लड़कियों का उत्तर था कि मेरे माता–पिता मेरे उच्च शिक्षा के लिये बाहर भेजने के पक्ष में नहीं है।

25 प्रतिशत लड़कियों का विचार था कि वे उच्च शिक्षा में इसलिये आई है ताकि समाज में उच्च प्रस्थिति प्राप्त हो सके। यह पूछे जाने पर कि क्या वे भविष्य में अच्छा पारिवारिक जीवन विवाह के पश्चात व्यतीत करना चाहती है या नौकरी पेशे को अपना कर एक स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है? इसके उत्तर में 69 प्रतिशत लड़कियों का उत्तर था कि वे नौकरी करके एक स्वतंत्र आर्थिक रूप से आत्म निर्भर जीवन व्यतीत करना चाहती हैं। यह एक उल्लेखनीय निष्कर्ष इस अध्ययन में उभर कर आया। अभी तक यह मान्यता रही है कि लड़कियों की शिक्षा उनके सुखी पारिवारिक जीवन के लिये तथा अच्छे वैवाहिक संबंध के लिये है लेकिन अब महिलाओं की मानसिकता बदल रही है। 65 प्रतिशत लड़कियों का यह मानना है कि यदि समाज में उच्च प्रस्थिति मिल जाती है जिसमें शिक्षा का योगदान अधिकत्तम होता तो पारिवारिक जीवन भी सुख मय होगा तथा वैवाहिक सम्बन्ध भी उचित बन जायेगा।

शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को बनाता है तथा उसे निखारता है। 76 प्रतिशत लड़कियों का यह मानना है कि शिक्षा से उचित व्यक्तित्व का विकास होता है तथा व्यक्ति स्वतंत्र निर्णय लेने में समर्थ बन पाता है। अधिकांश लड़कियों का यह मानना है कि इस स्थिति से स्त्रियों की आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। वे अपने बारे में निर्णय लेने में स्वतः समर्थ होगी। दूसरो पर उनकी आश्रिता कम होगी। मनुका विचार था कि स्त्री को आजीवन पराधीन रहना चाहिये। वाल्यावस्था में पिता के अधिन, युवा अवस्था में पति के अधिन तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधिन रहना चाहिये आज स्त्रियाँ यह बात मानने को तैयार नही है। इस सर्वेक्षण में सम्मिलित शत प्रतिशत लड़कियों का यह मानना था कि स्त्री शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा स्त्रियों में चली आ रही सदियों की पराधीनता कम करेगी और धीरे–धीरे पुरूषों के समान महत्वपूर्ण माने।

इस सर्वेक्षण में 90 प्रतिशत लड़कियों का मानना था कि अर्थिक विपन्नता समाज में सभी समस्यों का कारण है। शिक्षा के द्वारा ही स्त्रियाँ इस आर्थिक विपन्नता से मुक्ति पा सकेगी। लड़कियों को राजनीति में भाग लेना चाहिये या नही? इस प्रश्न के उत्तर में 77 प्रतिशत लड़कियों का मत

नकारात्मक था। उनका यह मानना था कि भारत में स्त्रियों का राजनीति के अपराधिकरण के कारण महिलाओं का राजनीति में भाग लेना उचित नही।

उत्तरदाताओं का यह मानना था कि यदि नारी प्रस्थिति को ऊँचा उठाना है तो यह आवश्यक है कि नारी शिक्षा की उपेक्षा न की जाय। इसके विपरीत नारी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाय। ताकि महिलाओं का शिक्षा के द्वारा विकास किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. देसाई नीरा (सम्पादक) 1977, एडिकेड ऑफ वोमेन्स मूवमेन्ट इन इण्डिया, हिमालय प्रकाशन, बम्बई।
2. कप्लान पैट्रिसिया (1965) क्लास एण्ड जेंडर इन इण्डिया, टाविस्तोक पब्लिशर, लंदन।
3. वोल्डिंग, एलाइस (1961), वूमेन एण्ड सोशल वायलेन्स, यूनेस्को प्रकाशन।
4. कांग, नीलू (1997), इंण्डियन रमन एक्टिविस्ट्स, बी.आर. पब्लिशिग कारपोरेशन, दिल्ली।
5. बोरा आशारानी (1992), नारी शोषण, आइने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग, हाऊस, नई दिल्ली।
6. www.wikipedia.in.com
7. www.hindikiduniya.com essay
8. https://m.meritnation.com
9. www.evrtualguru.com
10. www.essaysinhindi.com

आज की आवश्यकता बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

डॉ0 सरिता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
श्री गणेश राय पी०जी० कालेज डोभी, जौनपुर (उ०प्र०)

किसी राष्ट्र के समग्र विकास के लिए वहॉ की महिलाओं का विकास की मुख्य धारा से जुड.ा होना अत्यन्त आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब उस राष्ट्र की महिलाएं शिक्षित एवं सशक्त हों। एक शिक्षित एवं सशक्त महिला न केवल स्वयं अपने लिए, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी उपयोगी व महत्वपूर्ण साबित होती है। महिलाओं में आत्मविश्वास, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा अन्याय से लड.ने की नैतिक शक्ति शिक्षा से ही पैदा होती है। युगनायक स्वामी विवेकानन्द जी ने नारी उत्थान के लिए स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा है, *''पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे आपको बतायेंगी कि उनके लिए कौन–से सुधार आवश्यक हैं।'*

हमारे देश में महिला शिक्षा की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा एवं साहित्य के अवसर उपलब्ध थे। एक ऑकलन के अनुसार वेद के ऋचाओं में से 60 प्रतिशत मंत्रों की रचना महिला ऋषियों द्वारा की गई है। महिलाओं ने स्वयं तो उच्च प्रस्थिति प्राप्त की ही, वे पुरुषों की प्रेरणा भी बनीं। जहां ज्ञानेश्वरी, अपाला, मैत्रेयी, गार्गी, विश्वम्भरा, लोपामुद्रा, जाबाली जैसी महिलाओं ने अपने तप और ज्ञान के परचम को लहराया, वहीं रत्ना सरीखी महिलाएं महाकवि तुलसीदास की प्रेरणा भी बनीं। मध्यकाल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का स्वतंत्र अधिकार था। मुगलकाल में भी रजिया सुल्तान एवं नूरजहां जैसी महिलाओं ने सल्तनत चलाकर अपनी क्षमता का बखूबी परिचय दिया।

इतिहास के संघर्ष काल में विभिन्न चुनौतियों के चलते समाज में अनेक कुरीतियों का प्रादुर्भाव हुआ। धीरे–धीरे परिस्थितियां परिवर्तित हुईं, पितृपूजा के महात्म्य में वृद्धि हुई और उसकी क्रियान्विति पुत्र द्वारा ही सम्भव थी, पुत्री द्वारा नहीं। विवाह की आयु घटने लगी तथा विधवा विवाह निषिद्ध हो गये। इसी क्रम में दहेज प्रथा, बालविवाह, कन्या अपराध की समस्या में वृद्धि होने लगी और इनसे मुक्ति का सीधा समाधान खोजा गया– शिशु कन्या हत्या के टेढ़े–मेढ़े रास्ते में।

आज महिला शासन, प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। मसलन वह विमान उड.ा रही हैं, रेल चला रही हैं, चोटियां फतह कर रही हैं। यहां तक कि अंतरिक्ष भी उनसे अछूता नहीं रहा। उदाहरण के तौर पर प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, किरण वेदी, अरुन्धति राय, कर्णममल्लेश्वरी, सानिया मिर्जा, सुनिता विलियम्स आदि। किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कितनी संख्या में ? सम्पूर्ण नारी समाज की तस्वीर इसके विपरीत है। प्रायः महिलाओं की अस्मिता पर आघात होते रहते हैं। वह पुरुष अहं का शिकार होती रहती हैं। इतना ही नहीं, नवीन वैज्ञानिक तकनीकि का लाभ उठाकर प्रतिवर्ष लाखों कन्याएं जन्म लेने से पहले ही काल के गाल में समा जाती हैं जिसका प्रमाण है– भारत में बाल लिंगानुपात का निरन्तर 2001 के 1000 प्रति लड.कों पर 921 लड.कियों के मुकाबले 2011 में घटकर मात्र 914 रह जाना। आज प्रत्येक 1000 लड.कों की तुलना में 86 लड.कियां कम हैं। ग्रामीण के मुकाबले शहरी इलाकों में यह अनुपात और भी खराब है। जो लड.कियां भ्रूण हत्या के प्रकोप से बच जाती हैं, उनमें 5 से 9 वर्ष तक के आयु वर्ग की 50 प्रतिशत लड.कियां कुपोषण और 53 प्रतिशत निरक्षरता का शिकार होती हैं। छोटी लड.कियों के जीवन में आउटडोर गतिविधियों और स्वस्थ जीवन शैली को बहुत कम महत्व दिया जाता है और उनमें से अधिकतर घरों तक ही सीमित रहती हैं। इससे भी बदतर स्थिति यह है कि 4 वर्ष की होने से पहले ही 4 में से एक लड.की यौन प्रताड.ना की शिकार बन जाती है। इन सबके कारण ही हमारे देश में लड.की की मृत्यु की आशंका लड. के की अपेक्षा 75 प्रतिशत अधिक होती है। इसके अलावा प्रजनन आयु वर्ग में पुरुषों के मुकाबले महिला मृत्युदर 30 प्रतिशत अधिक है। लगभग 40 प्रतिशत महिलाएं कुपोषण एवं रक्ताल्पता का शिकार होती हैं। यह विडम्बना ही है कि जिस देश में कन्या को सदैव देवी का स्थान दिया गया है, वहॉ हम ऐसी स्थिति में कैसे पहुॅच गये कि लाखों देवियॉ कुपोषण, निरक्षरता, कमजोरी अथवा प्रताड.ना की शिकार हो रही हैं ?

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जहॉ पुरुषों की साक्षरता दर 82 प्रतिशत है वहीं महिलाओं की साक्षरता दर 63.5 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, विहार, झारखंड आदि राज्यों में यह 55 प्रतिशत से भी कम है। यहॉ विषय केवल साक्षरता का नहीं, पूरी शिक्षा का है। प्रवेश लेने के बाद

विद्यालयी शिक्षा से दूर होने वालों में बालिकाओं की संख्या अधिक है। प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर बहुत बड.ी संख्या में बालिकाओं द्वारा विद्यालय छोड.ना एक बहुत बड.ी चुनौती है। प्रायः परिवार में बालक–बालिकाओं को समान व्यवहार नहीं मिलता। बालकों को जहॉ परिवार का आधार माना जाता है वहीं बालिका को माता–पिता एक जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं। समाज में उपजे कुछ कुरीतियों के चलते जन्म से ही कन्या का स्वागत पूरे मन से नहीं होता। यही भाव बालिका के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति उदासीनता का कारण है। बालक की शिक्षा में धन लगाने को भविष्य का निवेश समझा जाता है और बालिका शिक्षा को निरर्थक व अनुपयोगी समझा जाता है। इस मानसिकता के कारण ही अधिकतम बालिकाएं प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर ही शिक्षा से वंचित रह जाती हैं।

कल्याणकारी योजनाएं–

बढ़ते लिंग परीक्षण एवं कन्या भ्रूण हत्या से बेटियों को बचाने एवं उन्हें समुचित शिक्षा प्रदान करने के लिए केन्द्र एवं राज्य दोनों ही स्तर पर अनेक कल्याणकारी योजनाएं एवं कार्यक्रम संचालित हैं। इनमें से किशोरी बालिका योजना 1992, बालिका समृद्धि योजना 1997, पोषाहार मिशन योजना 2001, मौलाना आजाद राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना 2003, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना 2003, लाडली लक्ष्मी योजना 2007 आदि प्रमुख हैं। इनके अलावा केन्द्र सरकार द्वारा बालिका शिक्षा और बालिका सशक्तीकरण को लेकर अन्य योजनाएं भी आरम्भ की गई हैं। इनमें से प्रमुख है – *बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना,* जिसे अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है। देश की बेटियों की रक्षा और उन्नति के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस योजना की शुरुआत 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत जिले से की गई। चूँकि समूचे देश में हरियाणा में लिंगानुपात 775 लड.कियों पर 1000 लड.कों का है, जो न्यूनतम है और यह बेटियों की दयनीय दशा को दर्शाता है। इसी वजह से इस योजना की शुरुआत हरियाणा राज्य से हुई। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने भाषण में कहा कि *'' मैं यहॉ बेटियों के जीवन की भीख मांगने वाला भिक्षुक बनकर आया हूँ। जब तक हम 18वीं शताब्दी की मानसिकता में हैं तब तक हमें अपने को 21वीं सदी का नागरिक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है।''*

प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट किया कि भ्रूण हत्या जैसे कृत्यों को रोकने के लिए हमें सामूहिक जिम्मेदारी लेनी होगी। भ्रूण हत्या के कारण न केवल हम वर्तमान पीढ़ी को नुकसान पहुँचा रहे हैं बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी घोर आपदा को आमंत्रित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने प्रसिद्ध उर्दू शायर अलताफ हुसैन हाली के चंद पंक्तियों को याद करते हुए कहा कि – *'' ऐ मेरी बहनें, माताएं एवं बेटियों आप संसार का गहना हैं, आप राष्ट्र का जीवन हैं, सभ्यताओं की आन हैं।'*

अंततः प्रधानमंत्री ने चिकित्सक समुदाय को यह याद दिलाया कि – चिकित्सा पेशा लोगों को जीवन देने के लिए बना है न कि खत्म करने के लिए। साथ ही समस्त देशवासियों से कहा कि *''लड.कियों को देश की शक्ति बनाओ, न कि परिवार, समाज, देश पर बोझ, कमजोर और असहाय इकाई।'* साथ ही उन्होंने इस योजना को सफल बनाने में देशवासियों से सहयोग की अपील की।

सौ करोड. रुपये के शुरुआती कोष के साथ यह योजना आरम्भ में देशभर के 100 जिलों में शुरू की गई। खासकर उन जिलों में जहॉ लिंगानुपात बेहद कम था। बाद में इसका विस्तार 61 अन्य जिलों में भी किया गया। इन चयनित जिलों में से कई जिलों में उम्मीद के मुताबिक सुधार भी देखने को मिला है। *बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना* का लक्ष्य समूचे देश में लैंगिक भेदभाव को मिटाने, लड.कियों को आर्थिक व सामाजिक दोनों तरह से स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी बनाना है। इसके अलावा कन्या भ्रूण हत्या को रोकना एवं बेटियों की शिक्षा, अस्तित्व एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करना भी है।

रणनीतियॉ –

- बलिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक सामाजिक आन्दोलन और समान मूल्य को बनाये रखने हेतु जागरूकता अभियान का कार्यान्वयन करना।
- निम्न लिंगानुपात वाले जिलों की पहचान कर गहन और एकीकृत कार्यवाही करना।
- सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्थानीय महिला संगठनों एवं युवाओं की सहभागिता को बढ़ाना।
- पंचायती राज संस्थाओं, स्थानीय निकायों एवं जमीनी स्तर पर जुड.े कार्यकर्ताओं को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करते हुए सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक की भूमिका में ढालना।

इस योजना के तहत छेड.छाड., बलात्कार जैसे घिनौने अपराध को नियन्त्रित करने हेतु भी अहं निर्णय लिए गये हैं। इस योजना के तारतम्य में *सुकन्या समृद्धि अकाउण्ट योजना* इसकी सबसे महत्वपूर्ण कड.ी है जो कन्या के भविष्य को सुरक्षित करती है। इस खाता की विशेष सुविधा यह है कि इस खाते में जमा राशि पर 9.1 प्रतिशत वार्षिक चक्रवृद्धि ब्याज दिया जाता है। यह योजना माता–पिता को अपनी

लड.की की बेहतर शिक्षा और भविष्य के लिए पैसे बचाने हेतु प्रोत्साहित करती है। इस योजना की सफलता एवं इसके प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए इसका ब्राण्ड अम्बेस्डर बालीवुड की प्रसिद्ध अभिनेत्री माधुरी दीक्षित को बनाया गया है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि– *हम चॉद पर पहुॅच गये हैं, हम मंगल पर भी पहुॅच गये हैं लेकिन दुःख की बात यह है कि कुछ लोग अभी भी अपनी बेटियों को बोझ की तरह देखते हैं।*

इसके अलावा केन्द्र सरकार द्वारा शैक्षिक रूप से पिछडे. 3479 उपखंडों में 10वीं और 12वीं कक्षा की छात्राओं के लिए 100 बिस्तरों वाले छात्रावासों की स्थापना की गई है। इस योजना का लक्ष्य अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड.ा वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग की 14 से 18 वर्ष की ऐसी बालिकाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है जो निम्न आर्थिक स्थिति के कारण बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड. देती हैं।

भारत सरकार की ओर से अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछडे. वर्ग की बालिकाओं के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना के लिए *कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना* का शुभारम्भ किया गया। इस योजना की शुरुआत पहले दो वर्ष तक एक अलग योजना के रूप में सर्व शिक्षा अभियान, बालिकाओं के लिए प्राथमिक स्तर पर शिक्षा दिलाने का राष्ट्रीय कार्यक्रम व महिला समाख्या योजना के साथ सामंजस्य बैठाते हुए शुरू की गई थी। बाद में इसे सर्व शिक्षा अभियान में एक अलग घटक के रूप में विलय कर दिया गया।

निष्कर्ष–

सरकार ने सार्थक प्रयासों के द्वारा दुष्चक्र को तोड़ने का प्रयास तो किया है किंतु वास्तव में यह केवल सरकार का ही विषय नहीं है। बालिका शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी प्रयासों के साथ–साथ सामाजिक विषमता एवं विभेद के विरुद्ध तो समाज को ही संघर्ष करना पड़ेगा। महिला शिक्षा को उपयोगी एवं व्यावहारिक बनाकर बालिकाओं को केवल प्रमाणपत्र एवं डिग्री के लिए शिक्षा देने के स्थान पर माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर विशेष पाठ्यक्रमों के रचना की आवश्यकता है जिससे बालिका न केवल अपने पैरों पर खड.ी हो, अपितु परिवार का आधार भी बने। एक स्वस्थ और शिक्षित बालिका समाज के एक उत्पादक सदस्य के रूप में आगे बढ़ती है। वह अपनी आय से न केवल अपने परिवार और खुद की मदद करती है बल्कि वह रोजगार को अपने पूरे बौद्धिक एवं सामाजिक विकास के रूप में देखती है जो एक स्वस्थ व्यक्ति का आवश्यक हिस्सा है। एक सशक्त एवं शिक्षित बालिका स्थाई सामाजिक विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है। आवश्यकता है महिलाओं को पुरुषों के समान पालन–पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं, प्राकृतिक संसाधन, कानूनी हक, आर्थिक अधिकार, प्रतिभाओं के विकास हेतु पर्याप्त रचनात्मक अवसर प्राप्त हों। बालक व बालिका के समाजीकरण में अपनाये जाने वाले दाहरे मानदंडों को खत्म किया जाए, निर्णय लेने में महिलाओं की भूमिका बढ़े और समाज की मानसिकता में बदलाव हो, तभी महिलाओं का बेहतर विकास व सशक्तीकरण हो सकता है। यह बदलाव घर से ही शुरू होता है, और यह शुरू होता है– एक मॉ के अपने बेटे और बेटी में किसी भी तरह का भेदभाव न किए जाने के साथ। इस प्रकार राष्ट्र के सार्थक विकास एवं मजबूत लोकतंत्र के लिए महिलाओं का विकास की मुख्य धारा से जुड.ा होना आवश्यक है। प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरु ने कहा है कि ''जब स्त्रियॉ आगे बढ़ती हैं, तो परिवार आगे बढ़ते हैं और राष्ट्र भी अग्रसर होता है।'' इस संदर्भ में महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित चंद पंक्तियों को दोहराना समीचीन है –

जिसे तुम समझे हो अभिशाप
जगत की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत जाओ इसको भूल।।

संदर्भः

- Barua B.K. (2004): Gender Bias Among Children in India in Care Diet in Immunisation Against Disease, Social Science And Medicine.
- International Council for Research On Women (ICRW): Quantitative Case Study; Recent Trends in Gender, Education And Marriage of Girls in India, Hariyana.
- UN Women Sex Ratios and Gender Biased Sex Selection: History, Debates and Future Directions, New Delhi 2014.